

## पाठ - 5 रोज़ा की सुन्नतें

## الدرس الخامس - هندي سنن الصوم

**सेहरी खाना** : رسول سलّلللاहु اّللّلهي वसल्लम ने फरमाया : **تَسَحَّرُوا فَإِنَّ فِي السَّحُورِ بَرَكَةً**

सेहरी खाया करो, क्योंकि सेहरी खाने में बरकत है। बुखारी 1923, मुस्लिम 1095) इस ताल्लुक से सुन्नत यह है कि सेहरी को रात के अंतिम हिस्से में खाया जाए। क्योंकि हदीस में आया है **لَا تَزَالُ أُمَّتِي بِحَيْرٍ مَا عَجَلُوا الْإِفْطَارَ، وَأَخْرَوْا السَّحُورَ**

मेरी उम्मत उस वक़्त तक भलाई पर कायम रहेगी जब तक कि वह इफ़तार में जल्दी और सेहरी में देर करती रहेगी। (सहीहुल जामे 2835)

जब सूरज डूब जाए तो इफ़तार में जल्दी करना चाहिए और सुन्नत यह है कि रूतब खजूर से इफ़तार करना चाहिए। यदि रूतब खजूर उपलब्ध न हो तो सूखे खजूर से, वह भी उपलब्ध न हो तो फिर पानी से और यदि उनमें से कोई न हो तो फिर जो उपलब्ध हो, उससे इफ़तार करे रोज़े में विशेष रूप से इफ़तार के समय दुआ का एहतिमाम करना चाहिए। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अल्लैहि वसल्लम ने फरमाया:

**ثَلَاثُ دَعَوَاتٍ مُسْتَجَابَاتٌ: دَعْوَةُ الصَّائِمِ، وَدَعْوَةُ الْمَسَافِرِ، وَدَعْوَةُ الْمَظْلُومِ**

तीन तरह की दुआएं ऐसी हैं जो कुबूल की जाती हैं एक रोज़ेदार की दुआ, मज़लूम की बददुआ और तीसरी मुसाफ़िर की दुआ। (इसे बेहकी आदि ने उल्लेख किया है।)

रोज़ेदार को रमज़ान की रातों में तरावीह का एहतिमाम करना चाहिए क्योंकि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अल्लैहि वसल्लम ने फरमाया है: **مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا، عُفِّرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ**

जिसने ईमान के साथ और सवाब की नीयत से रमज़ान में किया किया तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। (बुखारी 2009, मुस्लिम 759)

मुसलमान को इमाम के साथ पूरी तरावीह की नमाज़ पढ़नी चाहिए। इस लिए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अल्लैहि वसल्लम ने फरमाया है: **مَنْ قَامَ مَعَ إِمَامِهِ حَتَّى يَنْصُرَ كُتِبَ لَهُ قِيَامُ لَيْلَةٍ**

जो इमाम की घर वापसी तक उसके साथ किया किया (यानी खड़ा होकर नमाज़ अदा की) तो उसके हक में पूरी रात किया का सवाब लिखा जायेगा। (इसे अहले सुन्नत ने रिवायत किया है।) इसी तरह से रमज़ान के महीने में इंसान को सदका का अधिक से अधिक एहतिमाम करना चाहिए। इसी तरह ज्यादा से ज्यादा कुरआन करीम की तिलावत करनी चाहिए। क्योंकि रमज़ान का महीना कुरआन का महीना है और कुरआन पढ़ने वाले को हरेक अक्षर के बदले दस नेकी हासिल होती है और एक नेकी का बदला दस गुना मिलता है

**तरावीह की नमाज़** : रमज़ान के महीने में जमाअत के साथ रात में नमाज़ पढ़ने (कियामुल्लैल) को तरावीह कहते हैं। उसका समय इशा के बाद से तुलूए फ़ज़्र तक है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अल्लैहि वसल्लम ने कियामे रमज़ान की ताकीद फरमायी है।

सुन्नत यह है कि इंसान ग्यारह रकअतें पढ़े और हर दो रकअतों के बाद सलाम फेरे। और यदि ग्यारह रकअतों से ज़्यादा पढ़ता है तो कोई हर्ज नहीं है। तरावीह की नमाज़ इत्मिनान और सुकून से पढ़नी चाहिए और इतनी लंबी किरअत (कुरआन पाठ) मुस्तहब है जो नमाज़ियों पर बार न हो। और यदि किसी फिले का डर न हो तो औरतों के तरावीह में शामिल होने में कोई हर्ज नहीं है। शर्त यह है कि पर्दे में हों और श्रृंगार का प्रदर्शन करती हुई खुशबू लगा कर न आएँ।